किताबों वाली गुड़िया

नीतू सिंह

मैं गुड़िया हूं, मेरा यही नाम है और यही मेरी पहचान भी। आमतौर से मेरा साबका बच्चों से ही रहा है खास कर बच्चियों से, मुझे बनाने वाले भी अक्सर यही सोच कर हमें बनाते हैं। क्योंकि अभी तक तो बच्चे ही हमसे घर-घर खेलते आएं हैं, हमें सजाते, दूल्हा-दुल्हन बनाते, मोतियों के जेवर पहनाते, बिंदी लगाते, चूड़ी पहनाते, हमारी शादी करते और खुश होते। उनकी खुशी को देख हम भी खुश होते। कभी-कभी हमें घर के किसी कोने को सजाने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता। लेकिन एक रोज कुछ अलग हुआ, इस बार मुझे बनाने वाली एक लाइब्रेरियन थी। किताबों से भरे कमरे के बीच बैठकर वह मुझे बना रही थी। मुझे बनाने के लिए वह कुछ नए और रंग बिरंगे कपड़े लाई थी। मुझे बनाकर उसके काम का अंत नहीं हुआ, उसने मेरे जैसी ही एक और गुडिया बनाई, फिर एक और, फिर एक और। जब वह हमें बना रही थी तो हमें लगा कि, जरूर किसी बच्चे के हाथों में देने के लिए ही बनाया है। पर, जब लाइब्रेरियन से पता चला कि हमें लाइब्रेरी एज्युकेटर्स कोर्स के दौरान होने वाले एक डिस्प्ले में काम करने के लिए बनाया है, उस वक्त हमारे मन में एक साथ कई सवाल उठ रहे थे - ये लाइब्रेरी डिस्प्ले क्या है? हमें करना क्या होगा? क्या इस बार हमसे खेला नहीं जायेगा? ये सब हमारी तयशुदा भूमिकाओं से काफी अलग था।

हमसे रहा नहीं गया, अंततः हमने लाइब्रेरियन से पूछ ही लिया, ''हमें करना क्या है?'' ये डिस्प्ले क्या है?

लाइब्रेरियन ने बताया- देखो खासतौर से बच्चों के लिए बनाई गई लाइब्रेरी में किताबों से बच्चों के जुड़ाव के लिए, किताबों में उनकी रुचि जगाने के लिए कई तरह-तरह की गतिविधियां करते हैं। हम बुक टॉक करते हैं, खजाने की खोज खेल खेलते हैं, बुक ऑक्शन गतिविधि करतें हैं, बातचीत करते हुए किताब को पढ़कर सुनाते हैं, कहानियां सुनाते हैं। और जिन किताबों को लेकर इस तरह की गतिविधियां कर ली जाती हैं, बच्चे फिर उन किताबों को खोज-खोज कर पढ़ने लगते हैं। तो लाइब्रेरी में बच्चों के लिए ऐसी ही एक मजेदार गतिविधि है, डिस्प्ले। डिस्प्ले माने वैसे तो प्रदर्शनी होता है, लेकिन यह एक प्रदर्शनी मात्र नहीं है। यह उससे कुछ अलग, कुछ आगे की बात है। डिस्प्ले मुख्य तौर पर तीन तरह के होते हैं- (1) सूचनात्मक डिस्प्ले- इसके तहत जरूरी सूचनाओं को प्रदर्शित किया जाता है, (2) एक तरह का डिस्प्ले वह होता है जिसके तहत बच्चों के काम को प्रदर्शित किया जाता है, जैसे बच्चों की लिखी कविताएं, कहानियां, चित्र आदि। बच्चे अपनी रचनाओं को सबके लिए डिस्प्ले होते देखकर खुश हो जाते हैं, (3) एक और डिस्प्ले होता है जिसे हम थीम आधारित डिस्प्ले कह सकते हैं। कभी-कभी लाइब्रेरियन खुद बच्चों के लिए इसे तैयार करते है तथा कभी बच्चे और लाइब्रेरियन मिलकर भी इसे तैयार करते हैं। यह डिस्प्ले किसी थीम से संबंधित वस्तुओं की प्रदर्शनी भर नहीं होता। इसमें बच्चों के करने के लिए बहुत कुछ होता है। बच्चे जब इसे आकर देखते हैं, तो वे पाते हैं कि इस डिस्प्ले में उनके करने के लिए और इसमें अपनी ओर से जोड़ने के लिए भी काफी कुछ है। थीम डिस्प्ले के लिए पुस्तकों का चुनाव कई प्रकार से हो सकता है जैसे कविता, कथेतर, त्यौहार, लाइब्रेरी बुक,

मौसम इत्यादि। तो डिस्प्ले एक ऐसी गतिविधि हुई जिसमें लाइब्रेरियन को पूरे समय वहां उपस्थित रहने की जरूरत नहीं है। डिस्प्ले तैयार ही इस तरह से किया जाता है कि लाइब्रेरियन वहां न हो तब भी डिस्प्ले की छोटी-छोटी संवादात्मक गतिविधियों के बारे में लिखे निर्देशों को पढ़कर बच्चे खुद ही समझ जाते हैं कि करना क्या है।

लाइब्रेरियन बताती गई हम सवाल पूछते गए, उसने हमसे कहा सब जान जाओगे थोड़ा धैर्य रखो, पर हममें धैर्य कहां था। फिर एक दिन लाइब्रेरियन ने सामान और किताबों की पैकिंग की, हमें साथ लिया और भोपाल शहर के लिए रेल में बैठ गई। खैर, वो दिन आ ही गया और हम सब एक डिस्प्ले का हिस्सा बने जिसकी थीम थी, ''लाइब्रेरी बुक''।

एक बड़े से हॉल में बहुत सारी किताबे प्रदर्शित की गई थीं, और उस डिस्प्ले में हमारी भूमिका किताबों की इस दुनिया को जानने और समझने के लिए आने वालों का स्वागत करने की थी। एक बड़े कागज पर लिखा था ''लाइब्रेरी में आपका स्वागत है'' और हम पांचों ने उस कागज को चारों तरफ से पकड़ रखा था। हमारे इर्द-गिर्द किताबें रखी थीं और उन किताबों के साथ कई सारी चीजें भी रखीं थीं जैसे- कुछ जानवर, आइना, फोटो फ्रेम, चप्पल और भी बहुत कुछ। वह माहौल लोगों को किताबें उठाने और पढ़ने के लिए अपनी ओर खींच रहा था।

प्रतिभागी किताबों को देखने आते और हमें भी देखते, और कहते- ''ये गुड़ियां यहां क्या कर रहीं हैं? शायद ये हमें किताबों को देखने के लिए इशारा कर रही हैं।''

''हमने ऐसा कब कहा और इन्होंने कैसे सुन लिया?'' स्वागत वाले पेपर को हाथ में लिए लिए ही हमने सोचा। धीरे-धीरे हमें समझ में आया, यह डिस्प्ले का कमाल है। बहुत सी ऐसी बातें जो सीधे-सीधे नहीं कही जातीं, देखने भर से ही लोगों को समझ में आ जाती हैं। हमें समझ में आया कि डिस्प्ले बिना बोले लोगों से संवाद करने की कला है। कोर्स में अलग-अलग राज्यों से आये हुए लोगों से मिल कर अच्छा लग रहा था। कहां किताबें और कहां हम, बिलकुल ही अनोखा मेल था। हम इस तरह का काम भी कर सकते हैं यह सोचा न था, लाइब्रेरी के लिए काम करने का यह एक अलग ही अनुभव था।

कुछ दिनों के बाद पता चला कि हमें मुंबई जाना है, यह सुनते ही हम खुशी से झूम उठे और इसके साथ ही हमारे मन में कई सारे सवाल भी उठ रहे थे। फिर हमें लाइब्रेरियन ने बताया कि वहां होने वाली एक लाइब्रेरी वर्कशॉप में भाग लेना है और ''विविधता'' हमारे डिस्प्ले की थीम है। हमें अलग-अलग तरह की किताबों के विविध किरदारों में ढलना था, किताबों के भीतर कैसे-कैसे विषय मौजूद हैं, यह दिखाने के लिए हमें उन किरदारों के रूप में किताबों से बाहर आना था। ताकि पाठक जान पाएं कि किताबों से निकले ये किरदार कौन हैं? हमारा विश्वास था कि हमें देखने और जानने के बाद लोग हमारे साथी किरदारों को खोजने के लिए उन किताबों को खोलेंगे और पढ़ेंगे। हमें हमारी भूमिका के अनुसार तैयार किया गया, बड़ा ही मजा आ रहा था जैसे हम किसी बड़े उत्सव के लिए तैयार हो रहे हों। मेरी भूमिका थी मालथी की, जो कि ''उड़ चली'' किताब की मुख्य पात्र है। मेरे लिए लाइब्रेरियन ने एक छोटा-सा गत्ते का व्हीलचेयर बनाया था और दो पहिये अलग से बनाए थे जिसको मैंने अपने हाथों में उठाया, बिलकुल वैसे ही जैसे उड़ चली किताब के मुख्य पृष्ठ पर चित्र बना है। ये पहली बार था कि मैं व्हीलचेयर पर बैठने वाली गुड़िया बनी थी और अपने हाथों में पहिये को उठा कर ऐसा महसूस कर रही थी कि वो पहिये नहीं मेरे पंख हों और

अभी के अभी असमान में उड़ जाऊं। मालथी होला को भी कुछ ऐसा ही लगता होगा कि उनका व्हीलचेयर उनके पंख है तभी तो वे अंतर्राष्ट्रीय एथेलीट बन पाईं। सच में ऐसा मजेदार अनुभव कभी नहीं हुआ।

मेरी साथी गुड़िया ''क्यों क्यों लड़की'' किताब की मोयना बनी थी, वो भी बिलकुल मोयना की तरह तैयार हुई- वैसे ही सफेद और लाल बॉर्डर वाले कपड़े पहने और मोयना के जैसे ही अपने बालों में फूल भी लगाया था। जब लाइब्रेरियन उसे डिस्प्ले के लिए तैयार कर रही थी तब वो मोयना की तरह ही क्यों-क्यों करके खूब सवाल पूछ रही थी। उसको देख ऐसा लग रहा था मानो सच में मोयना ही किताब से बाहर आ गई हो और सवाल पूछे जा रही हो।

हमारा दूसरा साथी ''मुकुंद और रियाज'' किताब के पात्र रियाज की भूमिका निभा रहा था। लाइब्रेरियन ने उसे भी बिलकुल रियाज की तरह ही वेश-भूषा पहनाई और साथ में जिन्ना टोपी भी। उसे रियाज बना देख अच्छा लग रहा था और वो भी खुश हो रहा था क्योंकि उसने भी इस तरह का पहनावा कभी नहीं पहना था। मैं जब भी भारत के विभाजन के बारे में सोचती हिंसा की एक भयावह तस्वीर सामने आती थी। कभी सोचा न था कि हिंसा, मार पीट, खून खराबे से परे दोस्ती की ऐसी मिसालें भी थीं जिसे लोग अपनी जान पर खेल कर निभा रहे थे। हमारा यह साथी भी विविधता के उस डिस्प्ले में लोगों को द्वंद के अनुभव पर आधारित यह किताब पढ़ने का निमंत्रण दे रहा था।

हमारी एक और साथी ''पायल खो गई'' की मुख्य पात्र ''पायल'' की भूमिका निभा रही थी। उसके लिए लाइब्रेरियन ने कागज के गत्ते से सर्कस का एक ढांचा तैयार किया था और ठीक वैसा ही ढांचा बनाया जैसे सर्कस में काम करने वाले बच्चे रस्सी पर चलते हैं। पायल खो गई किताब का नाम सुन कर हमारे मन में भी कुछ सवाल बार-बार आ रहे थे - कहां खो गई थी पायल? कहां चली गई थी? कैसे मिली?

जीवन में पहली बार इतना सब कुछ हो रहा था, हम सब उत्साहित थे अपने-अपने किरदार को लेकर और शायद हम इस किरदार से बाहर निकलना भी नहीं चाहते थे। उस वर्कशॉप में मुंबई के अलग-अलग स्कूल में काम करने वाले शिक्षक आए थे। इतने सारे शिक्षकों से मिलने का यह पहला मौका था। वे भी हमसे मिलने डिस्प्ले के पास आ रहे थे। आपस में बातें करते और कहते, ''अरे.. ये तो मोयना है...'' कोई कहता, ''अरे ये तो उड़ चली किताब की मालथी है, ...'' तब हमारा भी मन करता की चिल्ला कर कहें, ''हां-हां बिलकुल ठीक पहचाना...''

कुछ समय बाद लाइब्रेरियन ने बताया कि हमें किताबों के एक और डिस्प्ले में भाग लेना है और जल्द ही हम देश की राजधानी में हो रहे एक कॉन्फ्रेंस में लाइब्रेरियन के साथ चल पड़े। डिस्प्ले की थीम थी ''जेंडर''। वहां जेंडर के विषय पर अलग-अलग तरह की किताबें डिस्प्ले की गई थीं। प्रदर्शित की गई किताबों में से एक किताब थी ''द पेपर बैग प्रिंसेस'' उस किताब की मुख्य पात्र प्रिंसेस की भूमिका मैं निभा रही थी और मैंने भी पेपर के कपड़े पहने थे। पेपर के बने कपड़े को पहनना एक अलग तरह की अनुभूति दे रहा था। थोड़ा अजीब था, पर मजेदार भी और मजेदार हो भी क्यूं ना आखिर मैं ड्रैगन को हरा देने वाली प्रिंसेस जो बनी थी। मेरी दूसरी साथी को लाइब्रेरियन ने ''द अनबॉय बॉय'' किताब के मुख्य पात्र गगन की भूमिका दी थी। उसके हाथ में भी एक छोटा-सा टेडी बेयर था जैसा कि गगन के हाथ में हुआ करता है। हम एक बार फिर से इतने सारे लोगों को एक साथ देख रहे थे, मैं थोड़ी घबराई हुई थी पर डिस्प्ले के लिए उत्सुक भी। जब प्रतिभागी हमें देख रहे थे तो मैं सोच रही थी कि जेंडर के जिस सवाल को हमने अपने शरीर पर ओढ़ रखा है उसको समझने के लिए ये कौन सी किताब चुनेंगे।

ये सिलसिला चलता रहा, हम अपनी लाइब्रेरियन के साथ अलग-अलग जगहों पर लाइब्रेरी का काम करते रहे। लाइब्रेरी एज्यूकेटर्स कोर्स का एक और नया बैच जल्द ही शुरू होने वाला था। हम नए बैच से मिलने के लिए बहुत ही उत्सुक थे। समय कैसे बीता, पाता ही नहीं चला। इस बार भी अलग-अलग राज्यों से प्रतिभागी आए थे। इस बार फिर से डिस्प्ले की थीम थी ''लाइब्रेरी बुक'', और मेरी भूमिका अलिया की थी, जो ''बसरा की लाइब्रेरियन'' किताब की पात्र है। अलिया बनने के लिए मैंने बिलकुल ही अलग वेश-भूषा धारण की, जो मैंने कभी नहीं पहनी और न कभी पहनने का विचार मेरे मन में आया, वो था हिजाब। हिजाब वाली गुडिया तो बाजार में भी नहीं मिलती तो विचार भी कैसे आता। अलिया बनना मेरे लिए बहुत ही गर्व की बात थी। क्योंकि करीबन सौ साल पहले विश्व युद्ध के दौरान, अपनी जान पर खेल कर, उन्होंने अपनी लाइब्रेरी की करीबन तीस हजार किताबों की रक्षा की थी। मेरी एक और साथी ''मिस मूर थॉट अदरवाइज'' किताब की पात्र मिस मूर बनी थी। उसने भी मिस मूर की तरह कपड़े पहने। वो भी उतनी ही गौरवान्वित हो रही थी जितनी कि मैं, क्योंकि मिस मूर ने बहुत साल पहले एक ऐसी बेहतरीन लाइब्रेरी का निर्माण व संचालन किया, जिसकी कल्पना अब जाकर हम कर पाते हैं, जहां बच्चे किताबों की तरफ देखते भी नहीं थे, वहां वे कताबें खोज-खोज कर पढ़ते थे।

अपने आप को आम से खास बनता देखना मेरी कल्पना के परे था। अपने वजूद के होने का एहसाह हो रहा था। ऐसा लग रहा था मैं एक बहुत जरूरी काम कर रही हूं, डिस्प्ले का काम, हर कोई जो हमें देखता हमसे कुछ जानने की कोशिश करता था। हमें ऐसा लग रहा था कि हम एक ऐसी खिड़की हैं जिनसे झांक कर लोग किताबों के बारे में जानते हैं। ◆

लेखिका परिचय : टाटा ट्रस्ट्स के पराग कार्यक्रम में लाइब्रेरी-एज्यूकेटर्स कोर्स की संयोजक (सहायक प्रबंधक) हैं। शिक्षा-शास्त्र और भाषा के अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ वे बाल-साहित्य, शिक्षक-शिक्षा और बच्चों के पुस्तकालय के क्षेत्र में कई वर्षों से कार्यरत हैं। इससे पहले वे डायट (भोपाल) में शिक्षक-प्रशिक्षक के रूप में काम करती थीं। वे घरेलू सामानों से बच्चों के लिए खिलौने भी बनाती हैं।

संपर्क : 9818140147 **ईमेल :** nitusingh@tatatrusts.org